18

प्रतिबिम्ब और असली स्वरूप

(10:1-18)

इब्रानियों का लेखक (अध्याय 5 के आरम्भ किए गए) अपने विस्तृत तर्क को समाप्त करके[1] 3½ अध्यायों वाली ताड़ना के प्रोत्साहन के लिए लगभग तैयार था, जिसके साथ उसने पुस्तक को समाप्त किया। उन अन्तिम भागों में वह पहले विचारे गए धर्मशास्त्रीय प्वायंटों पर बीच-बीच में समझाता रहा। परन्तु इस पाठ का वचन पाठ मुख्यतया मसीह और मसीहियत की श्रेष्ठता पर उसकी ''अन्तिम बात'' माना जा सकता है। पिछली आयतों में ज़ोर बलिदान के ऊपर था, इस कारण इस वचन को भी मसीह के बलिदान की श्रेष्ठता पर उसकी अन्तिम बात माना जा सकता है।

पवित्र शास्त्र का यह भाग प्रतिबिम्ब और असली स्वरूप में अन्तर करता है: ''क्योंकि व्यवस्था ... आने वाली अच्छी वस्तुओं का प्रतिबिम्ब है पर उनका असली स्वरूप नहीं'' (10:1क)। ''प्रतिबिम्ब'' शब्द (*skia*) से जबकि ''स्वरूप'' शब्द ''आकृति'' के लिए सामान्य शब्द (देखें KJV) (*eikon*) से लिया गया है। पुरानी वाचा (मूसा की व्यवस्था में केन्द्रित) प्रतिबिम्ब थी, जबकि नई वाचा (मसीहियत का केन्द्र) ''असली स्वरूप'' है। पहले परछाईं आई और फिर असली स्वरूप (देखें गलातियों 3:19, 24)। कल्पना करें कि आप किसी इमारत के पास खड़े हैं। आप उस इमारत के कोने की ओर बढ़ रहे किसी व्यक्ति की परछाई देखते हैं पर वह व्यक्ति अभी दिखाई नहीं दे रहा। एक पल में आप उस व्यक्ति के सामने आने पर उसे देख सकते हैं।

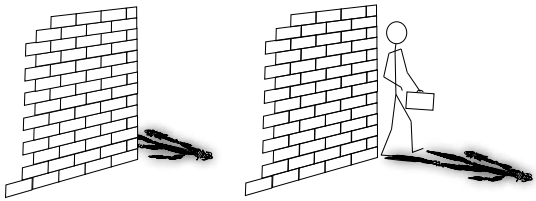

प्रतिबिम्ब का सम्बन्ध असली स्वरूप से है। यह आपको पास आ रहे व्यक्ति के आकार और बनावट के बारे में कुछ बताता है। एक अर्थ में परछाईं आपको असली स्वरूप के लिए तैयार करती है।[2]

इब्रानियों 10 अध्याय प्रतिबिम्ब और असली स्वरूप के बीच अन्तर को दिखाता है। जैसा कि हम देखेंगे कि प्रतिबिम्ब ने अच्छी बातों की *प्रतिज्ञा की* जबकि असली स्वरूप अच्छी बातें *देती है* (आयत 1)।

1. बहुत बनाम एक

प्रतिबिम्ब में कई बलिदान थे (आयतें 1, 3, 11)। असली स्वरूप में केवल एक है (आयतें 12, 14)।

2. अक्सर बनाम एक बार

परछाईं के बलिदान साल दर साल चढ़ाए जाते थे। असली स्वरूप का बलिदान एक ही बार चढ़ाया गया (आयत 12)।

3. अपूर्ण बनाम सिद्ध

प्रतिबिम्ब के बलिदान लोगों को सिद्ध नहीं बना सकते थे (आयत 1)। असली स्वरूप का बलिदान लोगों को परमेश्वर के सामने सिद्ध बना सकता है (आयत 14)।

4. याद दिलाना बनाम शुद्ध करना

प्रतिबिम्ब के बलिदान लोगों को पापों का स्मरण दिलाते थे पर विवेक को शुद्ध नहीं कर सकते थे (आयतें 2, 3)। असली स्वरूप का बलिदान विवेक को शुद्ध कर सकता है (देखें 9:14)।

5. नहीं सके बनाम सकता है

प्रतिबिम्ब के बलिदानों से पाप उठाए नहीं गए या उठाए नहीं जा सके (आयतें 4, 11)। असली स्वरूप का बलिदान पाप को उठाता है और उठा सकता है (आयतें 10, 12, 15-17)।

6. बाहरी बनाम भीतरी

प्रतिबिम्ब के बलिदानों में बाहरी संस्कार को छोड़ा गया है। असली स्वरूप का बलिदान मन से आज्ञा मानने पर ज़ोर देता है (आयतें 5-9)।

आयत 4 बताती है कि बैलों और बकरों के लहू से पाप के दूर करना असम्भव था। यह सच्चाई भजन संहिता 40:6-8 के उद्धरण में ले जाती है। इब्रानियों की पुस्तक के लेखक ने आरम्भ किया, ''इसी कारण वह [यीशु] जगत में आते समय [यीशु के देहधारी होने की बात] कहता है, ...'' (आयत 5क)। फिर आयतें 5 से 7 में एक अर्थ में यीशु की बात की बात के रूप में भजन संहिता 40 को दोहराया गया है। जब दाऊद ने भजन संहिता 40 लिखा था तो वह अपनी बात कर रहा था, परन्तु इब्रानियों के लेखक ने दाऊद और उसकी सन्तान के बारे में की गई भविष्यवाणियों को अन्तिम रूप में पूरा होना यीशु में देखा।

इब्रानियों 10:5-7 में भजन संहिता 40:6-8 को उद्धृत करने के बाद लेखक ने 10:8 में उद्धहरण के पहले भाग को अपने शब्दों में लिखा। उसने लिखा कि बलिदान (जिनसे परमेश्वर प्रसन्न नहीं था) मूसा की व्यवस्था के अनुसार चढ़ाए जाते थे। फिर उसने यह ज़ोर देने के लिए कि पशुओं के अनिच्छा से दिए जाने वाले बलिदान के विपरीत मसीह का बलिदान *स्वेच्छा से* किया गया बलिदान था, फिर भजन संहिता 40:7, 8 को उद्धृत किया।

निष्कर्ष यह है कि कोई दोनों ही प्रबन्धों को स्वीकार नहीं करेगा। हम देखते हैं कि पहला प्रबन्ध (पुरानी वाचा के अधीन की जाने वाली होम बलि) परमेश्वर को प्रसन्न *नहीं* करती थी और इस कारण उनकी जगह दूसरा प्रबन्ध (यीशु की स्वेच्छा बलि) दिया गया, जो परमेश्वर को प्रसन्न *करता* है। परमेश्वर केवल एक ही प्रकार के आज्ञापालन को स्वीकार करता है जो मन से महसूस करके, स्वेच्छा से आज्ञा को मानना है (देखें रोमियों 6:17, 18)।

7. असफलता बनाम सफलता

प्रतिबिम्ब के बलिदानों ने पवित्र किए जाने के उद्देश्य को पूरा नहीं किया, जबकि असली स्वरूप का बलिदान यह कर देता है (आयतें 10, 14)। विडम्बना यह है कि व्यवस्था का उद्देश्य शुद्धिकरण या पवित्र करना था। उदाहरण के लिए लैव्यव्यवस्था पवित्र वाचा के अधीन पवित्र लोगों के लिए पवित्र मन्दिर में पवित्र बलिदान करने के लिए पवित्र याजकाई है। अन्ततः याजकों के प्रयास उस उद्देश्य को पूरा करने से कोसों दूर रहे।

परन्तु ''हम [मसीही लोग] यीशु मसीह की देह के एक ही बार बलिदान चढ़ाए जाने के द्वारा पवित्र *किए गए* हैं'' (आयत 10क)। हमें ''एक ही बार'' पवित्र किया गया है (आयत 10ख) क्योंकि यीशु का बलिदान एक ही बार अर्थात दोबारा कभी न दोहराए जाने वाली घटना थी। उसके बलिदान ने अपने उद्देश्य को पूरा किया और पूरा करता रहता है।

8. अस्थाई बनाम सदा के लिए

प्रतिबिम्ब अस्थाई था। असली स्वरूप सदा के लिए था (आयतें 9, 11-18)।

याजक अपनी ड्यूटी पूरी करते हुए प्रतिदिन *खड़ा होते* थे (आयत 11क)। (तम्बू में बैठने का कोई स्थान नहीं था।) वे व्यस्त रहते थे; वे बार-बार ''एक ही प्रकार के बलिदान'' चढ़ाते थे (आयत 11ख)। इसके विपरीत यीशु ने ''एक ही बलिदान सर्वदा के लिए चढ़ाया और फिर परमेश्वर के दहिने *जा बैठा*'' (आयत 12)। बलिदान का उसका काम हो गया था।

यिर्मयाह 31:31-34 की प्रतिज्ञा (इब्रानियों 10:15-17; देखें 8:8-12) यीशु के सिद्ध बलिदान की ओर आगे को देखती थी, जिससे क्षमा मिलनी थी। वह बलिदान हो चुका है और क्षमा सम्भव कर दी गई है, इस कारण ''पाप का बलिदान नहीं रहा'' (आयत 18)। बलिदान के ''पहिले'' प्रबन्ध (पशुओं के बलिदानों) को ''दूसरे को नियुक्त'' करने (यीशु के बलिदान) के लिए हटा दिया गया है, और हम फिर भी खुश नहीं हैं।

सारांश

इस पाठ के परिचय में ध्यान दिलाया गया था कि हमारे वचन पाठ का नाम ''अन्तिम बात'' हो सकता है। यह अन्तिम बात आपका अन्तिम अवसर भी हो सकता है। मसीह ''परमेश्वर के दाहिने'' बैठा है ''जब तक उसके बैरी उसके पावों के नीचे की पीढ़ी'' नहीं बनते (आयतें 12, 13)। ऐसा उसकी वापसी के समय होगा (देखें 1 कुरिन्थियों 15:23-25)। क्या आप उसकी वापसी के लिए तैयार हैं? जब तक आप मसीह के बलिदान और उद्धार के असली स्वरूप को स्वीकार नहीं करते, आप तैयार नहीं हैं।

टिप्पणियां

[1]तर्क में शिक्षा के एक भाग से थोड़ी देर के लिए रुकावट पड़ी थी (5:11-6:20)। [2]यूनानी दर्शनशास्त्र के विद्वानों ने ध्यान दिया है कि यह रूपक किस प्रकार से सुकरात के ''एलिगोरी ऑफ़ द केव'' में प्रस्तुत विचारों से मिलता-जुलता है।